पदोंका अकारादिक्रमसे सूचीपत्र।

अ—आ

पद	पृष्ठ
अजित जिनेश्वर अघहरणं	६६
अजित जिन वीनती हमारी मानजी	१०
अपनो जानि मोहि तारले शांति कुंथु अर देव	६०
अब मोहि जानपरी भवोदधि तारनको है जैन	१२७
अब मोहि तारलेहु महावीर	८५
अब मोहि तारले शांति जिनेश	१००
अब मोहि तारले अर भगवान	१०१
अब मोहि तारले कुंथुजिनेश	१०१
अब हम नेमिजीकी सरन	७५
अर्जकरूं (तसलीम करूं) ठाडो विनऊं चरननको चेरो	१०८
अरज जिनराज यह मेरो इस्या अवसर बतावोगे	११६
अरज म्हारी मानोंजी याही	१०५
अरिरजरहसिहनन प्रभु अरहन जयवंतो जगमैं	३४
अहो देखो केवलज्ञानी ज्ञानी छवि भला या विराजे हो	११०
अहो नमिजिनप नित नमत शत सुरप	४६
आज आनंद वधावा	१८६
आज गिरिराजके शिखर सुंदर सखि	१८७
आज तो वधाई हो नाभिद्वार	१६१

आदिपुरुष मेरी आस भरोजी अवगुन मेरे माफ करोजी	७२
आनंदाश्रु वहत लोचनतैं तातैं आनन न्हाया	६८
आनंद भयो निरखत मुख जिनचंद	१२३
आयो प्रभु तोरे दरबार अब मोहि कारज सार	१२०
आज मनरी बनी छै जिनराज	११५
आज मैं परम पदारथ पायो, प्रभुचरननचित लायो	४७

इ—उ

इक अरज सुनों साहिब मेरी	६६
इष्ट जिन केवली म्हाकै इष्टजन केवली,	६०
उठोरे सुज्ञानी जीव जिनगुण गावोरे	१५
उत्तम नर जिनमतको धारें, सो श्रावक कहलाते हैं	१७६
उरग सुरग नरईश सीस जिस आतपत्र त्रिधरै	३१

ऋ—ए—ऐ—औ

ऋषभ तुमसे स्वाल मेरा, तुही है नाथ जगकेरा	११६
ऋषभदेव ऋषिदेव सहाई	११
एजी मोहि तारिये शांति जिनंद	७१
ऐसे जैनी मुनिमहाराज सदा उर मो वसो	१५१
ऐसे प्रभुके गुन कोउ कैसैं कहैं	१२०
ऐसे साधु सुगुरु कब मिलि हैं	१५५
और अवै न कुदेव सुहावै जिन थांके चरननरत जोरी	५२

क

कबधों मिलै मोहि श्रीगुरु मुनिवर करि हैं भवदधि पारा हो	१४८

करम देत दुख जोर हो साइयां १०५
करमूंदा कुपेच मेरे है दुख दाइयां हो १२४
कलिमें ग्रंथ बड़े उपगारी १३५
कहूं चिह कछु सुनो सुगुरुके जिनशासन अनुसारी है ३७
काम क्रोधवश होय कुधी जिनमतमें दाग लगाते हैं १७६
काम सरे सब मेरे देखे पारस स्वाम १६७
किंकर अरज करत जिन साहिब मेरी ओर निहारो १४
कीजिये कृपा मोहि दीजिये स्वपद ६६
कुंथुनके प्रतिपाल कुंथु जग तार सार गुनधारक हैं २७
केवलजोति सुजागीजी अब श्रीजिनवरकै ६३

ग—च—छ

गिरिवनवासी मुनिराज मनबसिया म्हारै १५५
गुरु समान दाता नहिं कोइ १५८
चरननचिह्न चितार चित्तमें वंदन जिन चउवीसकरों १६
चलि सखि देखन नाभिरायघर नाचत हरिनटवा १८७
चंदजिनेश्वर नाम हमारा, महासेनसुत जगतपियारा २२
चंद जिन विलोकवेतें फंद गलि गया ११७
चंद्रानन जिनचंद्रनाथके चरन चतुर चित ध्यावतु हैं २५
चिंतामणि स्वामी सांचा साहिब मेरा २३
छवि जिनराई राजै छै ११२

ज

जगतपति तुम हो श्री जिनराई ११८

जगदानंदन जिन अभिनंदन पद अरविंद नमूं मैं तेरे	६
जब बानी खिरी महावीरकी, तब आनँद भयो अपाराजी	१४५
जय जय जग भरमतिमरहरन जिनधुनी	१२६
जय जय नेमिनाथ परमेश्वर	८६
जय जिनवासुपूज्य शिवरमनीरमन मदनदनुदारन है	२६
जयवंतो जिनबिंब जगतमें जिन देखत निज पाया है	१६
जय वीर जिनवीर जिनवीर जिनचंद	५५
जय शिवकामिनिकंत वीर भगवंत अनंत सुखाकर हैं	३०
जय श्रीरिषभ जिनंदा नाश तो करो स्वामी मेरे दुख दंदा	५५
जय श्रीवीरजिनेंद्रचंद्र शत इंद्रवंद्य जगतारं	२०
जाउं कहां तज सरन तिहारे	५७
जिन छवि यह तेरी धन जगतारन	४७
जिन रागरोष त्यागा वह सत गुरु हमारा (दौलत)	१४६
जिन रागरोष त्यागा सो सतगुरु हैं हमारा (मानिक)	१६६
जिनराय मोहि भरोसो भारी	६३
जिनरायके पांय सदा सरनं	६८
जिनधुनि सुनि दुरमति नसि गई रे	१४४
जिनमुख अनुपम सूर्य निहारत भ्रमतम दूर भगाया है	१७
जिनवर आननभाननिहारत भ्रमतमघान नशाया है	३
जिनवर मूरत तेरी शोभा कहिय न जाय	६६
जिनवानी प्यारी लागै छै महाराज	१४०
जिनवानी सुन सुरत संभारे	१४३

जिनवानीके सुनेसों मिथ्यात मिटे समकित प्रगटे १३६
जिनवानी को को नहि तारे १४३
जिनवैन सुनत मोरी भूल भगी १२६
जिन साहिब मेरे हो निशहिये दासको ६७
जो मोहि मुनिको मिलावै ताको बलिहारी १६५

त

तारनको जिनवानी १३४
तिहारी याद होते ही मुझे अमृत बरसता है १२२
त्रिभुवनआनंदकारी जिनछवि थारी नैननिहारी ४६
त्रिभुवनमें नामी कर करुणा जिन स्वामी ६४
तुम गुनमनिनिधि हो अरहंत ५६
तुम चरननकी सरन आय सुखपायो १२३
तुम तार करुणाधार स्वामी आदि देव निरंजनो ६६
तुम विन जगमें कौन हमारा १२१
तुम शांतिसागर शांतिदायक शांति दो इस दासको (दर्शन) १८१
तुम सुनियो श्रीजिनराजा अरज इक मेरीजी ५४
तुम ज्ञानविभव फूली वसंत यह मनमधुकर सुखसों रमंत ८४
तूं जिनवर स्वामी मेरा, मैं सेवक प्रभु हों तेरा ७५
तूही तूही याद मोहि आवे जगतमें १२२
तेरी भक्ति विना धिक है जीवना १०३

थ

थांका गुण गास्याजी आदिं जिनंदा ११३

थांका गुण गास्याजी जिनजी राज, थांका दरसनतैं अघनास्या ११४
थांकी तो बानीमैं हो जिन स्वरूपप्रकाशक ज्ञान १३१
थारै तो बैनामैं सरधान घणो छै म्हारै छवि निरखत ४५
थेई मोनैं तारोजी प्रभुजी कोई न हमारो १०६

द

दरसन तेरा मन भावै ८३
दास तिहारा हूं मोहि तारो श्रीजिनराय ६६
दीठा भागनतैं जिनपाला मोहनाशनेवाला ४४
देखे जिनराज आज राज रिद्धि पाई १२
देखेदेखे जगतके देव रागरिससों भरे ७१
देखे मुनिराज आज जीवन मूल वे १६२
देख्या म्हानै नेमिजी प्यारा ८१
देखो कालप्रभाव आज पाखंड जगतमैं छाया है १७८
देखोजी आदीश्वरस्वामी कैसा ध्यान लगाया है १
देखोजी इक परम गुरुने कैसा ध्यान लगाया है २
देखो भाई श्रीजिनराज विराजै ८५

ध

धन धन जैनी साधु अबाधित तत्त्वज्ञानविलासी हो १५०
धनि ते साधु रहत वनमाही १५६
धन्य धन्य है घड़ी आजकी जिनधुनि श्रवन परी १३३
धनि धनि ते मुनि गिरिवनवासी १६०
धनि मुनि जिनकी लगी लौ शिवओरनैं १४६

धनि मुनि निज आतम हित कीना	१५८
धनि मुनि जिन यह भाव पिछाना	१५७
ध्यानकृपाण पानगहि नाशी त्रेसठ प्रकृति अरी	४३

न

नित पीज्यो धीधारी जिनवानी सुधासम जानके	१२८
निर्ग्रन्थ यती मन भावें कुगुरादिक नाहिं सुहावें	१६६
निरखत जिनचंद्रवदन स्वपर सुरुचि आई	५
निरखि सखि ऋषिनको ईश यह ऋषभजिन	४२
निरखि सुख पायो जिनमुखचंद	५२
नेमिजी तो केवलज्ञानी ताहीकों मैं ध्याऊं	६५
नेमिप्रभुकी श्यामवरन छवि नैनन छाय रही	५८
नैननको बान परी दर्शनकी	६४

प

पतित-उधारक पतित रटत है सुनिये अरज हमारी हो	१५
पद्मासद्म पद्मपद पद्मा-मुक्ति-सद्म-दरसावन हैं	८
परम गुरु बरसत ज्ञान झरी	१५७
परम जननी धरम कथनी, भवार्णव पारकों तरनी	१३६
परम वीतरागी गृहत्यागी शिवभागी निरग्रन्थ महान	१६८
प्रभु अब हमको होहु सहाय	८२
प्रभुजी अरज म्हारी उरधारो	१०७
प्रभुजी प्रभू सुपास जगवासतैं दासनिकास	१०३
प्रभुजी मोहि फिकर अपार	१०२

प्रभु तुम कहियत दीनदयाल ७७
प्रभु तुम चरनसरन लीनों मोहि तारो करुणाधार १००
प्रभु तुम मूरत दृगसों निरखे हरखै मोरो जीयरा ६
प्रभु तुम सुमरन होतैतारे ८६
प्रभु तेरी महिमा किह मुख गावैं ८७
प्रभु तेरी महिमा कहिय न जाय ८८
प्रभु थांकों लखि मम चित हरषायो ६३
प्रभु थारी आज महिमा जानी ५३
प्रभु थांसूं अरज हमारी हो १११
प्रभु पै यह वरदान सुपाऊं फिर जग कीचबीच नहिं आऊं ६५
प्रभु म्हाकी सुधि करुना कर लीजै ६३
प्रभु मैं किहविध थुति करूं तेरी ८२
प्रभु मोरी ऐसी बुधि कीजिये ५०
पारसजिनचरन निरख हरख यों लहायो ४
पारसपद नख-प्रकाश अरुन वरन ऐसो १०
प्यारी लागे म्हानै जिन छवि थांरी ४१
पास अनादि अविद्या मेरी हरन-पास परमेशा है २८
पूजित जिनराज आज आपदा हरी २२

व

वनमैं नगनतन राजै योगीसुर महाराज १६७
बरसत ज्ञान सुनीर हो, जिनमुखघनसों १३२
बंदों अद्भुत चंद्रवीरजिन भविचकोरचितहारी ५

बानी जिनकी बखानो हो जी, वाकों सब मुनि मनमें आनी	१४२
बंदों जिनदेव सदा चरन कमल तेरे	१६
बंदों नेमि उदासी मद मारवेको	७८
बधाई चंद पुरीमें आज	१६०
बधाई भाई हो तुम निरखत जिनराय	१६०
बधाई राजै हो आज राजै बधाई राजै	१८६
बामाघर बजत बधाई चल देखरी माई	१८६
बेगि सुधि लीज्यो म्हारी श्रीजिनराज	११४
भ	
भई आज बधाई निरखत जिनराई	१६१
भज ऋषिपति ऋषभेश ताहि नित नमत अमर असुरा	२४
भज जिन चतुरबिंसति नाम	११५
भजरे मनुवा प्रभु पारसको	१०१
भये आज अनंदा जनमे चंदजिनंदा	१६२
भवदधितारक नवका जगमाही जिनवान	१३७
भवनसरोरुहसूर भूरिगुनपूरित अरहंता	३२
भाई धन मुनि ध्यान लगायकै खरे हैं	१६०
भोर भयो भज श्रीजिनराज सफल होय तेरे सब काज	१२
भोर भयो सब भविजन मिलकर जिनवर पूजन आवो	१३
म	
मनकै हरष अपार चितकै हरष अपार बानी सुन	१३८
मनुवो लागिरह्योजी मुनिपूजा बिन रह्यो न जाय	१६२

महिमा है अगम जिनागमकी १३०
माई आज आनंद कछु कहि न बनै १८८
माई आज आनंद है या नगरी १८८
माई आज महामुनि डोलै १६३
मानुष जनम सफल भयो आज ६०
म्हाके घर जिनधुनि अब प्रगटी १३१
म्हाके जिनमूरति हृदय बसी बसी ६०
म्हारा मनकी लग गई मोहकी गांठ खोलों मैं तो जिनआगमसे १४१
म्हारी सुनज्यो दीनदयालु तुमसों अरज करूं १०७
म्हारी कौन सुनै, थे तो सुनल्यो श्रीजिनराज ११३
मुनि वन आये बना शिववनरी ब्याहनकों १६१
मेघघटासम श्रीजिनवानी १३२
मेरी बार कहा ढील करीजी ७६
मेरी सुध लीजै ऋषभ स्वाम, मोहि कीजे शिवपथगाम ३८
मेरो मनुवो अति हरषाय तोरे दरसनसों ११२
म्हे तो थांकी आज महिमा जानी अबलों उर नहिं आनी ७३
म्हे तो थांपर वारी वारी वीतरागीजी १०४
मैं आयो जिन सरन तिहारी ४०
मैं तुम सरन लियो तुम सांचे प्रभु अरहंत ६५
मैं नेमजीका बंदा मैं साहिबजीका बंदा ७८
मैं बंदा स्वामी तेरा ६४
मैं हरख्यो निरख्यो मुख तेरो ४०

मोकों तारोजी तारोजी तारोजी किरपा करकें १०८
मो सम कोन कुटिल खल कामी ६८
मोहि तारो जिन साहिबजी ९८
मोहि तारोजी क्यो ना, तुम तारक त्रिजगत्रिकालमें ३
मोहि तारो हो देवाधिदेव मैं मनवचतनकरि करौं सेव ८४

य—र—ल

या कलिकाल महानिशिमें जिनवचनचंद्रिका जारी है १७२
रुल्यो चिरकाल जगजाल चहुंगति विषै ७६
लगन मोरी पारससों लागी १०२
लूम झूम बरसै बदरवा मुनिवर ठाढ़े तरुवर तरवा १६५

व

वारो हो वधाई या शुभ साजं १८३
विनकाम ध्यानमुद्राभिराम तुम हो जगनायकजी ६४
वीतराग जिन महिमा थारी वरन सकै को जन त्रिभुवनमैं ५८
वीतराग मुनिराजा मोकों दरस बताजा, १६४
वे प्रानी सुरज्ञानी जिनजानी जिनवानी १३४
वे मुनिवर कब मिलि हैं उपगारी १५६

श

शरन गही मैं तेरी जगजीवन जिनराज जगतपति १२४
शरन मोहि वासुपूज्य जिनवरकी १००
शांतिवरन मुनिराई वर लखि १५२
शामरियाके नाम जपेत छूटजाय भवभामरियां ३६

शिवमग-दरसावन रावरो दरस	३७
शेष सुरेश नरेश रहैं तोहि, पार न कोई पावेजी	७२
श्रीअरहतछवि लखि हरिदै आनंद अनुपम छाया है	१८
श्रीआदिनाथ तारन तरनं	८७
श्रीगुरु हैं उपगारी ऐसे वीतराग गुणधारी वे	१५२
श्रीजिन तारनहारा थे तो मोनै प्यारा लागो राज	११०
श्रीजिनदेव न छाड हों सेवा मनवचकाय हो	६२
श्रीजिनपूजनको हम आये, पूजत ही दुखद्वंद मिटाये	२१-१०४
श्रीमुनिराजत समतासंग, कायोत्सर्ग समाहित अंग	१५१
श्रीजिनवर दरस आज करत सौख्य पाया	६
स	
सब मिल देखो हेली म्हारी हे, त्रिशलावाल वदनरसाल	३५
सम-आराम विहारी साधुजन, सम आराम विहारी	१५४
समझत क्यों नहिं वानी अज्ञानी जन	१३३
सम्यग्ज्ञान विना जगमें पहिचाननवाला कोई नहीं	१७४
सारद तुम परसादतैं आनंद उर आया	१३७
सांची तो गंगा यह वीतरागवानी	१३०
सांचे चंद्रप्रभू सुखदाय	६७
स्वामीजी तुम गुण अपरंपार चंद्रोज्वल अविकार	६२
स्वामीजी सांची सरन तिहारी	७४
स्वामी मोहि अपनो जान तारो, या विनती अब चितधारो	६१
स्वामी रूप अनूप विशाल मन मेरे वसत	६७

स्वामी श्रीजिननाभिकुमार, हमको क्यों न उतारो पार ९५
सीमंधरस्वामी मैं चरननका चेरा ७७
सुधि लीज्योजो म्हारी मोहि भवदुखदुखिया जानकै ५६
सुनकर वानी जिनवरकी म्हारै हरष हिये न समायजी १४१
सुन जिनवैन श्रवन सुख पायो १२८
सोई है सांचा महादेव हमारा ६७
सो गुरुदेव हमारा है साधो १५७

ह—ह

हरनाजी जिनराज मोरी पीर १११
हम आये हैं जिन भूप तेरे दर्शनको ९५
हम शरन गह्यो जिन चरनको १०६
हमको प्रभु श्री पासंसहाय ८०
हमारी वीर हरो भवपीर ३३
हे जिन तेरे मैं सरनै आया ३५
हे जिन तेरो सुजस उजागर गावत हैं मुनिजन ज्ञानी ५०
हे जिन मेरी ऐसी बुद्धि कीजै ३६
हे जिनरायजी मोहि दुखतैं लेहु छुड़ाय ९१
हो तुम त्रिभुवनतारी हो जिनजी, मो भवजलधि क्यों न तारत हो ५१
हो जिनवाणीजू तुम मोकों तारोगी १३८
हो स्वामी जगतजलधितैं तारो ८३
ज्ञानो ज्ञानी ज्ञानी नेमजी तुम ही हो ज्ञानी ८०
ज्ञानी मुनि हैं ऐसे स्वामी गुनरास १५३